डॉ. आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता

Dr. Ananda Coomaraswamy Fellowship

जियाङ् जिङ्कुइ

Jiang Jingkui

27 January 2016, New Delhi

डॉ. जियाङ् जिङ्कुइ
Dr. Jiang Jingkui

डॉ. जियाङ् जिङ्कुइ, जिन्हें आज साहित्य अकादेमी डॉ. आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता प्रदान कर रही है, एक प्रतिष्ठित विद्वान, प्रख्यात लेखक तथा पेकिंग विश्वविद्यालय, चीन में हिंदी के अत्यंत सम्मानित प्रध्यापक हैं। आप चीन के प्रारंभिक हिंदी प्रोफ़ेसर तथा भारतप्रेमी हैं, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन हिंदी भाषा तथा साहित्य के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। हिंदी साहित्य की कुछ महत्त्वपूर्ण एवं प्रतिष्ठित पुस्तकों को चीनी पाठकों तथा विद्वानों को उपलब्ध कराने के आपके उल्लेखनीय साहित्यिक प्रयास ने भारत-चीन संबंधों को मज़बूत किया है तथा चीनी पाठकों एवं विद्वानों को भारत तथा भारतीय संस्कृति के विषय में अधिक से अधिक जानने का अवसर प्रदान किया है। डॉ. जियाङ् जिङ्कुइ ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारत-चीन मित्रता तथा दोनों देशों के मध्य आपसी समझ को बढ़ावा दिया है। आपका मानना है कि भाषा और संस्कृति में सांस्कृतिक सेतु के रूप में कार्य करने तथा परिवर्तनों को प्रेरित करने की क्षमता है। आपका विश्वास है कि भाषाएँ संस्कृतियों और देशों के मध्य पुल का काम करती हैं।

डॉ. जियाङ् जिङ्कुइ का जन्म 1967 में हुआइआन, जियाङ्सु प्रांत, चीन में हुआ। आप हुआचोङ् उच्च विद्यालय, शुयाङ, जियाङ्सु प्रांत के छात्र रहे हैं। आपने पेकिंग विश्वविद्यालय के प्राच्य अध्ययन विभाग से भारतीय साहित्य एवं संस्कृति में स्नातक, स्नातकोत्तर तथा 1996 में पी-एच.डी. की उपाधियाँ प्राप्त की हैं।

Dr. Jiang Jingkui, on whom the Sahitya Akademi is conferring its Dr. Ananda Coomaraswamy Fellowship today, is a distinguished scholar, celebrated writer and much respected teacher/professor of Hindi at the Peking University, China. He is China's foremost Hindi Professor and an Indophile who has devoted his life to the cause of Hindi language and its literature. His remarkable literary efforts have strengthened the bond between India and China by making some of the important and renowned texts of Hindi literature available to the Chinese readers and scholars alike, thus enabling them to learn more about India and Indian Culture. Dr. Jingkui, through his work, has promoted Indo-China friendship and mutual understanding between the two nations. He believes that languages and culture have the capacity to act as cultural bridges and induce transformations. He also believes that languages bridge barriers across cultures and nations.

Dr. Jingkui was born in 1967 in Huai'an, Jiangsu province in China. He was a student at Huachong High School, Shuyang, Jiangsu Province. He did his B.A., M.A. and a Ph.D. in Indian Literature and Culture from the Department of Oriental Studies, Peking University in 1996. He has studied Hindi both in China and India. He is also the

आपने चीन तथा भारत–दोनों देशों में हिंदी का अध्ययन किया है। आप पेकिंग विश्वविद्यालय के दक्षिण एशियाई केंद्र के निदेशक भी हैं। इसके पूर्व आप पेकिंग विश्वविद्यालय के भारतीय अध्ययन केंद्र के उप-निदेशक एवं पेकिंग विश्वविद्यालय के दक्षिण एशियाई अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष तथा अन्य कई शैक्षिक पदों पर कार्यरत रहे हैं।

आपके 50 से अधिक शोध-लेख, 4 पुस्तकें, 1 अनुवाद तथा 10 से अधिक संपादित पुस्तकें प्रकाशित हैं। आपने व्यापक रूप से भारतीय संस्कृति, साहित्य, गौरवग्रंथों, थिएटर संबंधी विषयों पर शोध-आलेख प्रस्तुत किए हैं। आपके शोध-आलेखों में 'भारत में सांस्कृतिक परंपरा और आधुनिकता', 'तुलसीदास का आदर्श समाज', 'आधुनिक हिंदी नाटक', 'हिंदी लोक नाटक', 'भारतीय धर्म और समकालीन भारतीय समाज', 'विश्व शक्ति के केंद्र में भारतीय कदम', 'अतीत और वर्तमान में भारत-चीन सांस्कृतिक संपर्क', 'चार वैदिक देवता', 'भारतीय गौरवग्रंथों का चीनी रूपातंरण' उल्लेखनीय हैं।

आप तीन पुस्तकों के सह-लेखक भी रहे हैं। वे पुस्तकें हैं–*आधुनिक भारतीय साहित्य, मध्ययुगीन भारतीय धार्मिक साहित्य* तथा *रवींद्रनाथ टैगोर की साहित्यिक कृतियों का अध्ययन*। आप *हिंदी नाटक* शीर्षक पुस्तक के लेखक हैं। *भारत तथा चीन : सांस्कृतिक संबंध के सौ वर्ष* (2014) नामक पुस्तक के आप सह-अनुवादक रहे हैं। आपके द्वारा संपादित कृतियों में *दक्षिण एशियाई तथा दक्षिण-पूर्व एशियाई अध्ययन (दो खंड), रवींद्रनाथ टैगोर पर चीनी विद्वान, विचार के बहुआयामी क्षेत्रों में भारतीय साहित्य एवं संस्कृति* तथा *भारतीय साहित्य एवं संस्कृति पर आलेख-संग्रह (खंड 5 एवं 6)* सम्मिलित हैं।

Director, Centre for South Asian Studies, Peking University. He has, in the past, held various distinguished positions such as Vice-Director, Centre for India Studies at the Peking University; Head, Department of South Asian Studies, Peking University and many such academic ranks.

He has more than 50 papers, 4 books, 1 translation and more than 10 edited works to his credit. He has presented papers on a wide range of topics concerning Indian Culture, Literature, Classics, Theatre and the like. His papers include "Cultural Tradition and Modernity in India", "Tulsidas's Ideal Society", "Modern Hindi Drama", "Hindi Folk Drama", "Indian Religion and Contemporary Indian Society", "India Steps into the Centre of World Power", "The Past and Present of Sino-Indian Cultural Contact", "the Four Vedic Gods", "Chinese transaction of Indian Classics" and many others.

He has co-authored three books – *Modern Indian Literature, Medieval Indian Religious Literature,* and *Studies on Rabindranath Tagore's Literary Works* and has written a book, titled *Hindi Drama*. Dr. Jingkui has co-translated a work *India and China : A Thousand Years of Cultural Relations* published in 2014. Some of his edited works include two volumes on *South Asian and South-East Asian Studies, Chinese Scholars on Rabindranath Tagore, Indian Literature and Culture in Multidimensional fields of vision, Collection of papers on Indian Literature Vol. 5 & 6 on Indian Literature and Culture.*

आपकी शोध परियोजनाओं में चीनी-हिंदी शब्दकोश, रवींद्रनाथ टैगोर की रचनाओं का अध्ययन, भारतीय नाट्य अध्ययन, भारतीय धार्मिक साहित्य, भारतीय साहित्य का आधुनिक इतिहास, सूरसागर-अनुवाद एवं अध्ययन तथा चीन-भारत सांस्कृतिक संबंध विश्वकोष शामिल हैं। भारत-चीन के गौरवग्रंथ एवं समकालीन कृतियों का अनुवाद एवं प्रकाशन संबंधी परियोजना अभी कार्याधीन है।

आप विभिन्न पुरस्कारों/सम्मानों से विभूषित हैं, जिनमें *मध्ययुगीन भारतीय धार्मिक साहित्य* पुस्तक के लिए सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी के क्षेत्र में बीजिंग का सर्वश्रेष्ठ शोध पुरस्कार (2012), *रवींद्रनाथ टैगोर पर चीनी विद्वान* पुस्तक के लिए चीन उत्तर 15 प्रांतीय पुस्तक पुरस्कार (2012), *विचार के बहुआयामी क्षेत्रों में भारतीय साहित्य तथा संस्कृति* के लिए चीन उत्तर 13 प्रांतीय पुस्तक पुरस्कार (2011) और 8वें विश्व हिंदी सम्मेलन के अंतर्गत हिंदी में प्रख्यात योगदानकर्ता पुरस्कार तथा अन्य कई पुरस्कार सम्मिलित हैं।

डॉ. जियाङ् जिङ्कुइ ने अपनी शिक्षाओं और पुस्तकों के माध्यम से भारत-चीन संबंधों को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। डॉ. जियाङ् जिङ्कुइ को डॉ. आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए साहित्य अकादेमी अत्यंत गौरव का अनुभव कर रही है।

His many research projects include Chinese-Hindi Dictionary, Studies on Rabindranath Tagore's Works, Indian Drama Studies, Indian Religious Literature, Modern History of Indian Literature, Sursagar – Translation and Research, Encyclopedia of China–India Cultural contacts and Sino–Indian translation and publication project of Classic and Contemporary works which is under progress.

He has been felicitated with various awards which include Beijing Outstanding Research Award in Social Science and Humanities for the book "Medieval Indian Religious Literature", (in 2012) "China North 15 Provinces Book Award" for the book *Chinese Scholars on Rabindranath Tagore* (in 2012), "China North 13 Provinces Book Award" for the book "Indian Literature and Culture in multimedia fields of vision" (2011), Award for Eminent Contributors in Hindi at the 8th World Hindi Conference and many others.

Dr. Jingkui has made considerable contribution in fostering Sino-Indian ties through his teachings and books. Sahitya Akademi takes immense pride in bestowing its Dr. Ananda Coomaraswamy Fellowship on Dr. Jiang Jingkui.

Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
Rabindra Bhavan
35, Ferozeshah Road, New Delhi 110001 (India)
Tel. : +91-011-23386626/ 27/ 28
Email : secretary@sahitya-akademi.gov.in
Website : www.sahitya-akademi.gov.in